संस्कृतायनम्

डॉ. आशुतोष पारीक

भारतीय ज्ञान परम्परा १

संस्कृत साहित्य में मानवमूल्य परम्परा

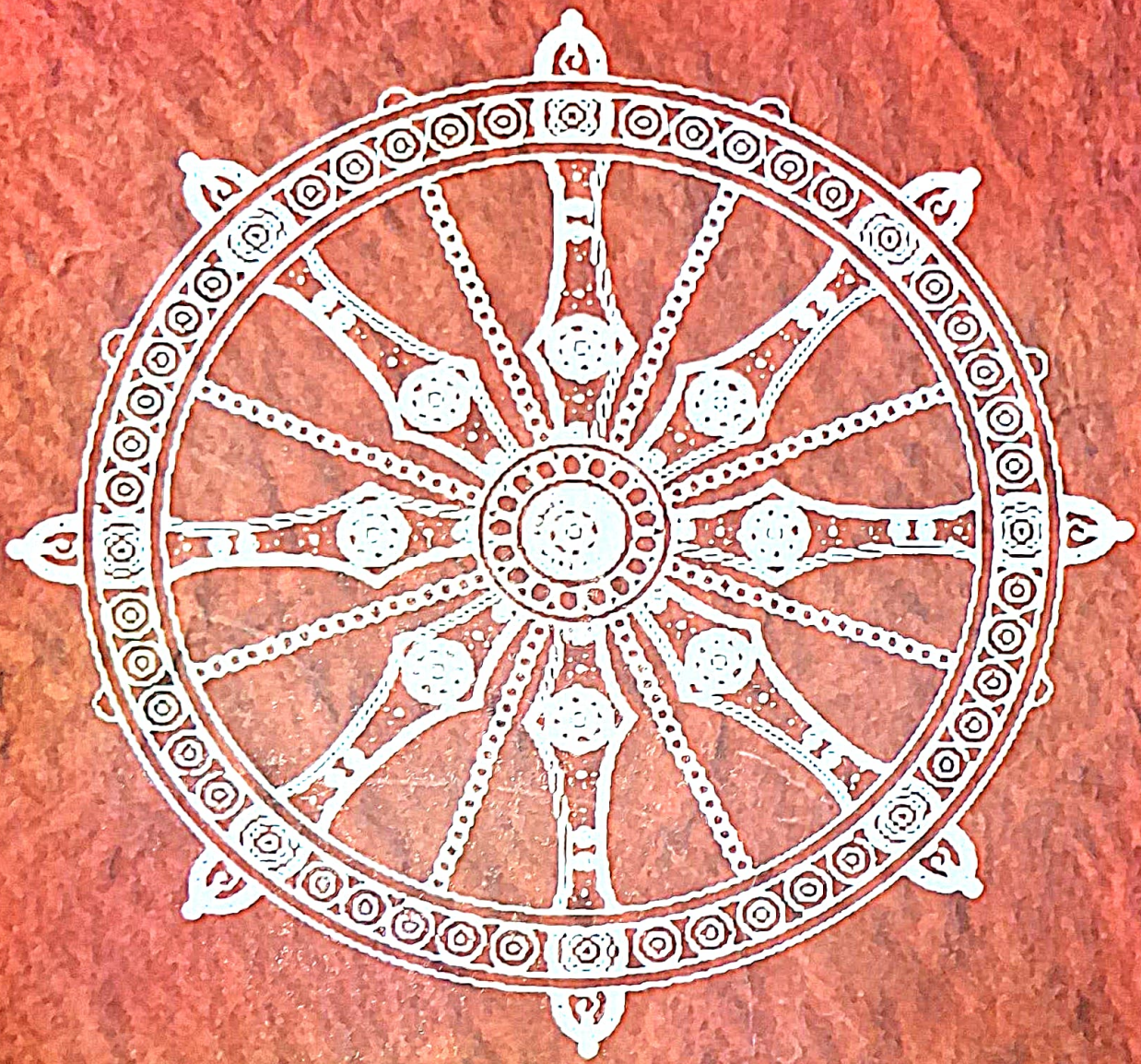

सम्पादक
डॉ. आशुतोष पारीक

प्रकाशक :

अभिनव प्रकाशन

प्रथम मंज़िल, 56, इलाहाबाद बैंक (इंडियन बैंक) के सामने,
कचहरी रोड, अजमेर (राजस्थान) - 305001, भारत

दूरभाष : (+91) 0145-2431158, 9983111549
ई-मेल : info@abhinavprakashan.com
sales@abhinavprakashan.com
वेबसाइट : www.abhinavprakashan.com

कॉपीराइट © 2024 सम्पादक
प्रथम संस्करण 2024 में प्रकाशित

इस पुस्तक के सर्व अधिकार सुरक्षित हैं।
सम्पादक एवं प्रकाशक की पूर्व लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को, फोटोकॉपी एवं रिकॉर्डिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा मशीनी, किसी भी माध्यम से अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुनःप्रयोग के प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरुत्पादित अथवा संचारित-प्रसारित नहीं किया जा सकता।

ISBN : 978 - 81 - 968928 - 0 - 7

आवरण चित्र : वेंकटेश शर्मा
लेज़र टाइप सेटिंग : **श्रीनिवास प्रिंटोग्राफ़िक्स**, भारत

यह पुस्तक इस शर्त के अधीन बेची जाती है कि यह व्यापार के माध्यम से अन्यथा प्रकाशक की पूर्व सहमति के बिना, किसी अन्य रूप में बाइंडिंग या कवर के बिना, उधार, पुनर्विक्रय, किराए पर, या अन्यथा परिचालित नहीं किया जाएगा, जिसमें यह प्रकाशित हुआ है।

SANSKRIT SAHITYA MEIN MANAV MOOLYA PARAMPARA
Edited By DR. ASHUTOSH PAREEK **मूल्य : ₹699**

Disclaimer : While every precaution has been taken in the preparation of this book, the publisher and the author cannot be held responsible for any errors or omissions, or for any loss, damage, or disruption caused by errors or omissions, whether such errors or omissions result from negligence, accident, or any other cause.

वितरक

- **साहित्यागार**, धामाणी मार्केट की गली, चौड़ा रास्ता, जयपुर
- **हंसा प्रकाशन**, नाटाणी भवन, चाँदपोल, जयपुर

१४ वैदिक साहित्य में मानवीय मूल्यों की अवधारणा
• डॉ. गिरीश कुमार, शिमला (हि.प्र.) १४९
१५ भर्तृहरि के शतकत्रय में अभिव्यक्त मानवीय मूल्य
• डॉ. मृणालिनी आबासाहेब शिंदे, कराड, महाराष्ट्र १५८
१६ मनुस्मृति में मानवीय मूल्यों की अवधारणा
• डॉ. वर्षा खण्डेलवाल, अलवर, राजस्थान १७२
१७ वेदों में निहित जीवनमूल्यों की वर्तमान में प्रासंगिकता
• डॉ. कामना सहाय, ब्यावर, राजस्थान १८२
१८ रघुवंश में मानवीय मूल्यों की अवधारणा
• डॉ. दिनेश शर्मा भारद्वाज, शिमला, हिमाचल प्रदेश १८६
१९ श्रीमद्भागवतपुराण में मानवीय मूल्य
• डॉ. वेद प्रकाश पाण्डेय, शिमला, हिमाचल प्रदेश १९५
२० नीतिशतक में प्रतिपादित शिक्षा में मानवीय मूल्य
• डॉ. दिनेश कुमार शर्मा, दरभंगा, बिहार २०४
२१ शूद्रक विरचित मृच्छकटिकम् में मानवीय मूल्य
• प्रीति शर्मा, ब्यावर, राजस्थान २०९
२२ संस्कृत मुक्तक साहित्य में नैतिक मूल्य
• रमन शर्मा, जम्मू २१६
२३ अभिराज राजेन्द्र मिश्र के जानकीजीवनम् में मानवीय मूल्य
• डॉ. अंजुम आरा, नाथद्वारा, राजस्थान २२९
२४ श्रीहर्ष विरचित 'नैषधीयचरितम्' में मानवीय मूल्य
• इला पारीक, बीकानेर, राजस्थान २३५
२५ स्मृतिकारों की दृष्टि में मानवीय मूल्य
• डॉ. गायत्री बैरवा, जयपुर, राजस्थान २४२
२६ वैदिक ऋषियों के लोकमंगल में मानवीय मूल्य
• डॉ. शैलजा रानी अग्निहोत्री, ब्यावर, राजस्थान २५०

१५

भर्तृहरि के शतकत्रय में अभिव्यक्त मानवीय मूल्य

डॉ. मृणालिनी आबासाहेब शिंदे
सहायक प्राध्यापक, संस्कृत विभाग,
वेणूताई चव्हाण कॉलेज, कराड

शोधसारांश – भर्तृहरि के शतकत्रय में कर्तव्य, विद्या, अर्थ, सेवा, सुजनता, मित्रता, परोपकार, धैर्य, कर्तृत्वकर्म, तृष्णारहितता, मधुरवचन, विषयत्याग, सन्तोष, क्षमा आदि मानवीय मूल्य अभिव्यक्त हुए हैं। इन मानवीय मूल्यों से विश्व में सुख, समृद्धि, प्रसन्नता, शान्ति आदि की स्थापना की जा सकती है। मानवीय मूल्य केवल मनुष्य के लिए उपयुक्त नहीं हैं, अपितु विश्व में समस्त प्राणियों के लिए कल्याणकारी हैं। यदि मनुष्य इन मानवीय मूल्यों को ईमानदारी से आत्मसात् करेंगे, तो उनका जीवन सफल हो जायेगा क्योंकि मानवीय मूल्य और मानवी जीवन का पारस्परिक गहरा सम्बन्ध है। मानवीय मूल्य व्यक्ति, कुटुम्ब, समाज, राष्ट्र एवं विश्व का आधार स्तम्भ हैं। समाज और संस्कृति के संवर्धन के लिए मानवीय मूल्यों का आरोपित होना जरूरी है। इसलिए भर्तृहरि के शतकत्रय में मानवीय मूल्य के प्रति जो प्रतिबद्धता है, वह न केवल सराहनीय है, अपितु सत्य और उपयुक्त भी है।

बीजशब्द– भर्तृहरि, शतकत्रय, नीतिशतकम्, शृंगारशतकम्, वैराग्यशतकम्, मानवीय मूल्य।

प्रस्तावना– मनुष्य अपने जीवन से अच्छाई अपनाता है और जो बुरा होता, उसे त्याग देता है। हम सभी को हर दिन हर वक्त प्रिय-अप्रिय, भले-बुरे की अनुभूतियाँ आती हैं। यह जो भलाई-बुराई है, उसे ही मूल्य कहते हैं। मूल्य साध्य भी है और कभी-कभी साधन भी है। मूल्य पुरुषार्थ है, जिनके सहारे मनुष्य का सम्पूर्ण जीवन सफल होता है, पवित्र होता है, सजता और सँवरता भी